To,

**The Principal Secretary to Governor**
RajBhavan, Patna

Subject: **Regarding submission of proposed syllabus of Hindi (MJC Paper 03 to 13, 15 & 16/MIC Paper 03 to 10) Undergraduate level from Sem-03 to 08.**

Ref : **No. BSU(UGC) 02/2023-1457/GS(I), dated-14.09.2023 of Raj Bhavan, Patna.**

Sir,

In compliance to your letter No. **BSU(UGC) 02/2023-1457/GS(I), dated-14.09.2023** of Raj Bhavan, Patna. we are submitting syllabus of Hindi undergraduate from 3rd Sem to 8th Sem Major and Minor courses.

Yours Faithfully

**Prof. Tarun Kumar**
Professor

**Prof. Ranvijay Kumar**
Professor,
P.G. Dept. of Hindi

**Prof. Kalanath Mishra**
Professor

**Prof. Diwakar Pandey**
HOD, P.G. Dept. of Hindi
**(Additional)**

**Dr. Bipin Bihari Sharan Diwedi**
Prof. P.G. Dept. of Hindi

**Prof. Anita**
HOD, P.G. Dept. of Hindi
**(Additional)**

**Prof. Bahadur Mishra**
Hindi
**(Additional)**

**Prof. Siddharth Shanker**
Professor
**(Additional)**

**Prof. Ashok Kumar Sinha**
**(Additional)**

**Dr. Kalyan Kumar Jha**
Professor
**(Additional)**

**Prof. Mangala Rani**
Professor
**(Additional)**

**A. P. Gupta**
Associate Professor
**(Additional)**

**Prof. Usha Sinha**
Professor & Head
**(Additional)**

**Dr. Harish Chandra Shahi**
Associate Professor
**(Additional)**

## SEMESTER- III

## MJC3 : हिन्दी साहित्य का इतिहास : आधुनिक काल

### Course Objectives

इस पत्र के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी हिन्दी साहित्येतिहास के आधुनिक काल की पृष्ठभूमि, उसकी विविध प्रवृत्तियों को जान सकेंगे। साथ ही आधुनिक काल से संबंधित पद्य काव्यों एवं गद्य विधाओं की महत्वपूर्ण उपलब्धियों, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिन्दी साहित्य के अवदानों से अवगत होंगे।

| | **MJC3 : हिन्दी साहित्य का इतिहास : आधुनिक काल (Theory: 05 Credits)** | | |
|---|---|---|---|
| **Unit** | **Topics to be covered** | **No. of Lectures** | **L.T.P 5-1-0 Per Week** |
| 1 | • भारतेन्दु एवं द्विवेदी युग | 06 | |
| 2 | • छायावाद | 04 | |
| 3 | • प्रगतिवाद, उत्तर छायावाद, प्रयोगवाद, नई कविता, साठोत्तरी कविता | 10 | |
| 4 | • समकालीन कविता (1980 से आज तक) | 10 | |
| 5 | • स्वतंत्रता–पूर्व हिंदी गद्य एवं उसकी विविध विधाओं का विकास | 10 | |
| 6 | • स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्य एवं उसकी विविध विधाओं का विकास | 10 | |
| | **TOTAL** | **50** | **L-(50)+T(10)=60** |

### Course Outcomes

इस पत्र के अध्ययन के उपरांत प्राप्त जानकारी से जहाँ विद्यार्थियों की समष्टिगत, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना का विकास होगा, वहीं वे विविध प्रतियोगी परीक्षाओं में भी सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

**सहायक पुस्तकें :–**


1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिंदी नवजागरण की समस्याएँ : राम विलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1984
2. साहित्य और इतिहास दृष्टि : मैनेजर पांडेय, पिपुल्स लिटरेसी, दिल्ली, 1981
3. हिंदी साहित्यः बीसवीं शताब्दी : नन्ददुलारे वाजपेयी, लोकभारती, इलाहाबाद, 1983
4. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोक भारती, इलाहाबाद, 1986
5. कविता के नये प्रतिमान : नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1968


21.09.23 विपिन द्विवेदी 21.9.23 21/09/23

6. विवेक के रंग : देवी शंकर अवस्थी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1965
7. दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र : ओम प्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2001
8. आधुनिक साहित्य में दलित विमर्श : देवेन्द्र चौबे, ओरिएंटल ब्लैक श्वान, दिल्ली, 2009
9. आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहास : नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन
10. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास : लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय
11. इतिहास और आलोचना : नामवर सिंह
12. छायावाद : नामवर सिंह
13. आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ : नामवर सिंह
14. हिंदी का गद्य साहित्य : रामचन्द्र तिवारी
15. आधुनिक हिंदी साहित्य : विविध आयाम : रामचन्द्र तिवारी
16. गद्य साहित्य : विकास और विन्यास : रामस्वरूप चतुर्वेदी

**SEMESTER- III**

**MJC-4 : आधुनिक हिन्दी कविता : छायावाद तक**

**Course Objectives**

इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी भारतेन्दु युग से लेकर छायावाद तक की हिन्दी कविता के विकास का पाठगत परिचय प्राप्त करने के साथ–साथ तत्युगीन महत्वपूर्ण कवियों के काव्यगत अवदान से परिचय हो सकेंगे। पाठगत विशलेषण के द्वारा विद्यार्थी कवियों की विभिन्न शैलियों से परिचित होंगे एवं उनमें आलोचनात्मक चेतना का विकास भी संभव होगा।

| | **MJC-4 : आधुनिक हिन्दी कविता : छायावाद तक (Theory: 04 Credits)** | | |
|---|---|---|---|
| **Unit** | **Topics to be covered** | **No. of Lectures** | **L.T.P 4-1-0 Per Week** |
| 1 | • भारतेन्दु – भारत दुर्दशा<br>• अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' – प्रियप्रवास (प्रथम सर्ग, प्रारंभिक 11–20 छंद) | 08 | |
| 2 | • मैथिलीशरण गुप्त –'पंचवटी' खण्ड काव्य (प्रारंभिक 1–16 छंद)<br>• रामनरेश त्रिपाठी – 'स्वप्न' खण्ड काव्य (पहला सर्ग, प्रारंभिक 1–12 छंद) | 08 | |
| 3 | • जय शंकर प्रसाद – 'लहर' –, बीती विभावरी जाग री, वे कुछ दिन कितने सुन्दर थे, जग की सजल कालिमा रजनी | 06 | |
| 4 | • सूर्यकांत त्रिपाठी निराला – 'राग–विराग' (सं.– राम विलास शर्मा) – बादल–राग : छटा भाग वर दे वीणावादिनी वर दे; राजे ने अपनी रखवाली की; शिशिर की शर्वरी | 06 | |
| 5 | • सुमित्रानंदन पंत – तारापथ – प्रथम रश्मि, मौन निमंत्रण, नौका विहार | 06 | |
| 6 | • महादेवी वर्मा – 'आधुनिक कवि' (हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग) – विरह का जलजात जीवन, मधुर–मधुर मेरे दीपक जल, मैं नीर भरी दुख की बदली | 06 | |
| | **TOTAL** | **40** | **L-(40)+T(10)=50** |

## Course Outcomes

इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी 1850 ई० से 1936 ई० तक भारत में होनेवाले राजनीतिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन को आत्मसात् कर वर्तमान परिवेश का तुलनात्मक विश्लेषण करने की क्षमता विकसित कर सकेंगे। साथ ही भारतीय नवजागरण एवं राष्ट्रीय आंदोलन को संवेदना के धरातल पर ग्रहण कर विद्यार्थी विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं में इन तथ्यों को नये दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत करने में सफल होंगे।

**सहायक पुस्तकें :–**


1. आधुनिक हिंदी कविता का इतिहास : डॉ. नंद किशोर नवल, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली,
2. समकालीन काव्य यात्रा : डॉ. नंद किशोर नवल, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
3. मैथिलीशरण : डॉ. नंद किशोर नवल, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
4. छायावाद : डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. निराला की साहित्य साधना (दूसरा भाग) : डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. निराला कृति से साक्षात्कार : नन्द किशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
7. आधुनिक हिंदी कविता : डॉ. विश्वनाथ तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
8. महादेवी : इन्द्रनाथ मदान, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
9. जय शंकर प्रसाद : रमेश चन्द्र शाह, साहित्य अकादेमी, दिल्ली
10. निराला : परमानन्द श्रीवास्तव, साहित्य अकादेमी, दिल्ली
11. निराला की साहित्य–साधना (खंड 1, 2) : राम विलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
12. मनीषा : दृष्टि और दिशाएँ– डॉ० सीताराम दीन, सेतु प्रकाशन, इलहाबाद


21.09.2023 21.09.23 21.9.23 21.9.23 21/9/23 21/9/23 21-09-2023 21/09/23 21.9.23

## SEMESTER - IV

## MJC - 5: छायावादोत्तर हिन्दी कविता

## COURSE OBJECTIVES

छायावाद के बाद हिन्दी कविता के विकास को समझने के लिए उस दौर के महत्त्वपूर्ण कवियों के व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व से अवगत होना जरूरी है। इस काल की कविता की प्रवृत्तियों एवं काव्यगत वैशिष्ट्य को समझने के पश्चात ही विधार्थियों की आलोचनात्मक क्षमता का विकास संभव होगा। कविता में हो रहे बदलाव को आत्मसात करने एवं अवगत होने के लिए इस पाठ की आवश्यकता होगी।

| MJC - 5: छायावादोत्तर हिन्दी कविता (Theory: 05 Credits) | | | |
|---|---|---|---|
| **Unit** | **Topics to be covered** | **No. of Lectures** | **L-T-P 5-1-0 Per Week** |
| 1 | **केदारनाथ अग्रवाल** – माँझी! न बजाओ वंशी, वह जन मारे नहीं मरेगा, यदि आयेगा डॉलर, खेत का दृश्य, चंद्रगहना से लौटती बेर, बसंती हवा | 08 | |
| 2 | **नागार्जुन** – घिन तो नहीं आती, बादल को घिरते देखा है; खुरदरे पैर, शासन की बंदूक; अकाल और उसके बाद; मैं तुम्हें अपना चुंबन दूँगा | 08 | |
| 3 | **रामधारी सिंह 'दिनकर'** – कुरुक्षेत्र (षष्ठ सर्ग) | 08 | |
| 4 | **माखनलाल चतुर्वेदी** – झरना; कैदी और कोकिला, नाश का त्यौहार (हिमकिरीटिनी)<br>**स. ही. वा. 'अज्ञेय'** – कलगी बाजरे की; कतकी पूनो; सोन-मछली, नदी के द्वीप, साम्राज्ञी का नेवैद्य दान | 10 | |
| 5 | **भवानीप्रसाद मिश्र** – सतपुड़ा के जंगल; गीत-फरोश (दूसरा सप्तक)<br>**रघुवीर सहाय** – पढ़िए गीता; रामदास; हँसो हँसो जल्दी हँसो, नेता क्षमा करें | 10 | |
| 6 | **ग.मा.'मुक्तिबोध'** – मुझे कदम-कदम पर; मुझे पुकारती हुई पुकार<br>**गिरिजा कुमार माथुर** – आज हैं केसर रंग रंगे वन; बुद्ध (तारसप्तक) | 06 | |
| | **Total** | 50 | 50 (L) + 10(T) = 60 |

## Course outcomes

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी छायावाद के बाद हिन्दी कविता में हो रहे बदलावों से अवगत होंगे। छायावादोत्तर हिन्दी कविता की प्रवृत्तियों एवं काव्यगत वैशिष्ट्य को समझ सकेंगे। उनकी कविता की समझ एवं आलोचनात्मक क्षमता में वृद्धि होगी। इस दौरान वे इस के कवियों के व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व से भी परिचित होंगे।

**सहायक पुस्तकें –**


1. प्रतिनिधि कविताएँ : केदारनाथ अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. प्रतिनिधि कविताएँ : नागार्जुन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. कुरुक्षेत्र : रामधारी सिंह दिनकर, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली
4. काव्य–कुसुम : सं. गणेशानंद झा, गायत्री देवी,मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन, पटना
5. सन्नाटे का छंद : सं. अशोक वाजपेयी, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर
6. मन एक मैली कमीज है : सं. नंदकिशोर आचार्य, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर
7. प्रतिनिधि कविताएँ : रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8. चाँद का मुँह टेढ़ा है : ग. मा. मुक्तिबोध, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
9. आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहास : नंद किशोर नवल, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
10. कवि अज्ञेय : नंद किशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
11. कविता के नये प्रतिमान : नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
12. नयी कविता और अस्तित्ववाद : रामविलाश शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
13. तार सप्तक : सं. अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
14. दूसरा सप्तक : सं. अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
15. तीसरा सप्तक : सं. अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
16. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ : नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

17. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

18. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास : लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

19. हिन्दी काव्य समीक्षा के प्रतिमान : महेश तिवारी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

20. साहित्यलोचन : सिद्धांत और अध्ययन – डॉ. सीताराम दीन भारती भवन प्रकाशन, पटना

21-09-2023

21.9.23

21.9.23

21/9/23

21.9.23

21/09/23

## SEMESTER - IV

## MJC - 6 : भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र

## COURSE OBJECTIVES

साहित्य के अध्ययन हेतु काव्यशास्त्र की जानकारी आवश्यक है। काव्य के विभिन्न भेदों की जानकारी के अभाव में साहित्य का अध्ययन अपूर्ण माना जाता है। काव्य के विभिन्न उपकरणों यथा – अलंकार, छंद आदि से परिचय कराना इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है। इसके साथ ही, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के विवादों को समझाना तथा काव्य संबंधी आलोचनात्मक चेतना का विकास करना ही इस अध्याय का प्रमुख ध्येय है।

| MJC - 6 : भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र (Theory: 05Credits) | | | |
|---|---|---|---|
| **Unit** | **Topics to be covered** | **No. of Lectures** | **L-T-P 5-1-0 Per Week** |
| 1 | भारतीय काव्यशास्त्र का इतिहासः सामान्य परिचय, काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य – प्रयोजन | 08 | |
| 2 | काव्य–भेद, शब्द–शक्ति, काव्य–गुण, काव्य–दोष | 08 | |
| 3 | रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य सिंद्धांतों का सामान्य परिचय | 08 | |
| 4 | प्रमुख अलंकारों के लक्षण – उदाहरण – यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, भ्रांतिमान, श्लेष, असंगति, विरोधाभास, अतिशयोक्ति, विभावना, मानवीकरण।<br>प्रमुख छंदों के लक्षण–उदाहरण – दोहा, चौपाई, रोला, सोरठा, कवित्त, सवैया, छप्पय, कुंडलिया, बरवै, उल्लाला | 10 | |
| 5 | **पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास** : सामान्य परिचय<br>प्लेटो, अरस्तु, लोंजाइनस की काव्य संबंधी मान्यताएँ एवं सिद्धांत | 10 | |
| 6 | वर्ड्सवर्थ, कॉलरिज, क्रोचे एवं इलियट की काव्य संबंधी मान्यताएँ एवं सिद्धांत। | 06 | |
| | **Total** | 50 | 50 (L) + 10 (T) = 60 |

# Course outcomes

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात विधार्थी काव्यशास्त्र की मौलिक अवधारणाओं से परिचय प्राप्त करेंगे। काव्य के विभिन्न प्रकारों से अवगत होंगे। साथ ही, भारतीय काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के विवादों को भली भांति समझ पायेंगे। काव्य के विभिन्न उपकरणों यथा – अलंकार एवं छंद से परिचित होंगे। अध्ययन के पश्चात् उनकी काव्य संबंधी आलोचनात्मक चेतना विकसित होगी।

**सहायक पुस्तकें –**


1. काव्य के तत्व : आचार्य देवेंन्द्रनाथ शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. भारतीय साहित्यशास्त्र कोश : डॉ. राजवंश सहाय 'हीरा', बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना
3. भारतीय आलोचना – शास्त्र : डॉ. राजवंश सहाय 'हीरा', बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना
4. पाश्चात्य साहित्यशास्त्र कोश : डॉ. राजवंश सहाय 'हीरा', बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना
5. साहित्यालोचन : डॉ. श्याम सुंदर दास, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. भारतीय काव्य चिंतन, डॉ. शोभा कांत मिश्र, अनुपम प्रकाशन, पटना
7. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : डॉ. तारकनाथ बाली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8. भारतीय काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्य साहित्य : चिंतन, डॉ. सभापति मिश्र, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
9. पाश्चात्य साहित्य चिंतन : निर्मला जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
10. अरस्तु का काव्यशास्त्र : अनुवादक : डॉ. नगेंद्र एवं महेंद्र चतुर्वेदी, हिंदी अनुसंधान परिषद्, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली


21.09.2023 21/09/23 21.9.23 21.9.23 21-09-2023 21/9/23 21/9/23 21.9.23

11. साहित्यालोचन : सिद्धांत और अध्ययन, डॉ. सीताराम दीन, भारती भवन, पटना

12. पाश्चात्य काव्य चिंतन – डॉ. शोभाकांत मिश्र, अनुपम प्रकाशन, पटना

## SEMESTER - IV

## MJC - 7: हिंदी की साहित्यिक विधाएँ : उद्भव और विकास

### COURSE OBJECTIVES

हिंदी की साहित्यिक विधाओं के स्वरूप, उद्भव एवं विकास की अवधारणा को सपूर्णता में समझना इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है। इस पाठ के माध्यम से विभिन्न साहित्यिक विधाओं की विशिष्टता एवं महत्त्व से विद्यार्थियों को परिचित कराना तथा विभिन्न विधाओं के बीच के अंतर को स्पष्ट करना आवश्यक है ताकि विद्यार्थी विधाओं के विकास एवं आधुनिकता के संबंध को समझ सके।

| MJC - 7 : हिंदी की साहित्यिक विधाएँ : उद्भव और विकास (Theory: 05 Credits) | | | |
|---|---|---|---|
| **Unit** | **Topics to be covered** | **No. of Lectures** | **L-T-P 5-1-0 Per Week** |
| 1 | साहित्य का स्वरूप : संक्षिप्त परिचय (भेद लक्षण एवं तत्त्व : भारतीय एवं पाश्चात्य मत) | 08 | |
| 2 | हिंदी की साहित्यिक विधाएँ : सामान्य परिचय एवं उद्भव और विकास<br>पद्य : महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तककाव्य, चम्पूकाव्य, स्फुटकाव्य | 08 | |
| 3 | गीति काव्य, प्रगीत, नयी कविता, नवगीत | 08 | |
| 4 | गद्यः उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, निबंध, आलोचना, यात्रा–वृत्तांत | 10 | |
| 5 | पत्र–साहित्य, डायरी, रिपोर्ताज, रेखाचित्र/शब्दचित्र, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा | 10 | |
| 6 | साहित्यिक विधाओं में अंतर<br>• महाकाव्य और खण्डकाव्य<br>• प्रबंध काव्य और मुक्तककाव्य<br>• उपन्यास और कहानी<br>• नाटक और एकांकी<br>• संरमरण और यात्रा–वृत्तांत<br>• जीवनी और आत्मकथा<br>• रेखाचित्र और संस्मरण | 06 | |
| | **Total** | 50 | 50 (L) + 10 (T) = 60 |

## Course outcomes

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी साहित्यिक विधाओं के स्वरूप एवं इतिहास के साथ–साथ उनके उद्भव एवं विकास की अवधारणा को समझ पायेंगे। वे विभिन्न साहित्यिक विधाओं की विशिष्टता एवं महत्त्व के साथ ही विभिन्न विधाओं के मध्य मौलिक अंतर से अवगत होंगे।

**सहायक पुस्तकें –**

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिंदी साहित्य का इतिहास : संपादक डॉ. नगेंद्र, पेपरबैक।
3. साहित्यालोचन : डॉ. श्यामसुंदर दास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. कविता क्या है : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
5. साहित्य विधाओं की अंतः प्रकृति : डॉ. हरिमोहन।
6. हिंदी का गद्य साहित्य : रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
7. कविता के नये प्रतिमान : नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
8. हिंदी गद्य : विन्यास और विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत : गणपति चंद्र गुप्त, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10. हिंदी उपन्यास का विकास : मधुरेश, लोकभारती, प्रकाशन, इलाहाबाद
11. हिंदी कहानी का विकास : मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
12. हिंदी आलोचना का विकास : मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
13. नयी कविता : नंददुलारे वाजपेयी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

14. हिंदी साहित्य : उद्‌भव और विकासः हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
15. हिंदी काव्य का इतिहास : रामस्वरूप चतुर्वेदी, राज कमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
16. हिंदी नाटक : बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
17. हिंदी साहित्य कोश : सं. डॉ. धीरेंद्र वर्मा (प्रधान), ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी
18. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली : डॉ. अमरनाथ, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
19. हिंदी कहानी का विकास : डॉ. गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
20. साहित्यालोचनः सिद्धांत और अध्ययन – डॉ. सीताराम दीन – भारती भवन, पटना
21. बोलती रेखाएँ – डॉ. उषारानी सिंह – मांगलिका प्रकाशन, पटना

## SEMESTER – V

### MJC 8 : हिंदी भाषा : उद्‌भव और विकास

**Course Objective –**

हिंदी भाषा के उद्‌भव और विकास तथा भारतीय आर्यभाषा परिवार के विकास–क्रम की समझ के साथ–साथ अवधी, ब्रजभाषा और खड़ी बोली के साहित्यिक भाषा के रूप में विकास की प्रक्रिया को विद्यार्थी जान सकेंगे।

**MJC 8 : हिंदी भाषा : उद्‌भव और विकास**

**(Theory: 06 Credits)**

| Unit | Topics to be covered | No. of Lectures | L.T.P |
|---|---|---|---|
| 1 | • भारतीय भाषा–चिंतन की परंपरा : पाणिनि, भर्तृहरि और दिङ्.नाग का भाषा विषयक चिंतन<br>• भारोपीय भाषा परिवार से आधुनिक भारतीय भाषाओं का उद्‌भव और विकास | 10 | |
| 2 | • मध्य काल में देश में आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास, प्राकृत और अपभ्रंश से उनका संबंध तथा हिंदी जाति की अवधारणा<br>• राजस्थानी, अवधी, ब्रज तथा खड़ी बोली का भौगोलिक परिचय एवं उनकी सामान्य विशेषताएँ | 16 | |
| 3 | • नवजागरण और आधुनिक हिंदी आंदोलन : हिंदी, उर्दू, हिंदुस्तानी | 12 | |
| 4 | • अन्य भारतीय भाषाएँ और हिंदी भाषा की विशिष्टता और एकता | 06 | |
| 5 | • स्वाधीनता संघर्ष में हिन्दी की भूमिका<br>• संविधान में हिंदी, राजभाषा, राष्ट्रभाषा एवं संपर्क भाषा के रूप में हिंदी | 08 | |
| 6 | • देवनागरी लिपि की विशेषताएँ और मानकीकरण का प्रश्न<br>• बिहार की प्रमुख बोलियाँ– मगही, भोजपुरी, मैथिली, अंगिका और बज्जिका का सामान्य परिचय | 08 | |
| | **कुल** | **60** | L - 60 + T – 15 = **75** |

**Course Ooutcome –**

इस पत्र के अध्ययन से भाषा चिन्तन की भारतीय परम्परा, भारोपीय भाषा परिवार एवं मध्यकाल में भाषा के विकास को जान सकेंगे। इसके अलावा आधुनिक हिन्दी आंदोलन, हिन्दी की संवैधानिक स्थिति, देवनागरी लिपि के साथ–साथ विद्यार्थी अपनी भाषा और बोली के विकासात्मक स्वरूप को समझ सकेंगे।

**सहायक पुस्तकें :**


1. भाषा और समाज : रामविलास शर्मा
2. हिंदी साहित्य का आदिकाल – हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. पुरानी हिंदी : चंद्रधर शर्मा गुलेरी
4. भारतीय आर्य भाषा और हिंदी : सुनीती कुमार चटर्जी
5. हिंदी उद्भव विकास एवं रूप : हरदेव बाहरी
6. हिंदी भाषा : डॉ भोलानाथ तिवारी
7. राजस्थानी भाषा का उद्भव और विकास : डॉ. दामोदर लाल शर्मा
8. हिंदी भाषा का इतिहास : धीरेंद्र वर्मा
9. राजभाषा हिंदी : डॉ. भोलानाथ तिवारी
10. बज्जिका भाषा और साहित्य : डॉ॰ सियाराम तिवारी
11. बज्जिका भाषा के कतिपय शब्दों का आलोचनात्मक अध्ययन : डॉ॰ योगेन्द्र प्रसाद सिंह
12. बज्जिका का स्वरूप : डॉ॰ योगेन्द्र प्रसाद सिंह


21.09.2023

# SEMESTER – V

## MJC 9 : हिंदी उपन्यास

**Course Objective –**

उपन्यास की अवधारणा एवं हिन्दी उपन्यास के विकास–क्रम से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे। प्रेमचन्द, जैनेन्द्र, यशपाल, मन्नू भंडारी एवं फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास–साहित्य की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। गबन, त्यागपत्र, दिव्या, महाभोज, जुलूस उपन्यास में निहित भाव एवं कला पक्ष को समझेंगे एवं इनमें निहित विचारों पर चिन्तन कर सकेंगे।

| **MJC 9 : हिंदी उपन्यास (Theory: 06 Credits)** | | | |
|---|---|---|---|
| Unit | Topics to be covered | No. of Lectures | L.T.P |
| 1 | उपन्यास की अवधारणा और हिन्दी उपन्यासों का विकास–क्रम | 04 | |
| 2 | गबन – प्रेमचंद | 12 | |
| 3 | त्यागपत्र –जैनेन्द्र | 08 | |
| 4 | दिव्या–यशपाल | 12 | |
| 5 | महाभोज–मन्नू भंडारी | 12 | |
| 6 | जुलूस–फणीश्वरनाथ रेणु | 12 | |
| | **कुल** | **60** | L - 60 + T – 15 = **75** |

**Course Ooutcome –**

भारतीय कथा–साहित्य की परम्परा में उपन्यास की अवधारणा और विकास–क्रम की जानकारी को समृद्ध करना इस पत्र का प्रमुख अभीष्ट है। हिन्दी उपन्यास में प्रेमचन्द मील के पत्थर हैं। ऐसी स्थिति में गबन उपन्यास के अध्ययन से आभूषणप्रियता के मोह का दुष्परिणाम और सेवा भावना के महत्त्व से परिचित होंगे। साथ ही त्यागपत्र उपन्यास के माध्यम से मनोवैज्ञानिक चेतना तथा दिव्या के माध्यम से बौद्ध–जीवन दर्शन के ज्ञान से समृद्ध हो सकेंगे। महाभोज उपन्यास के माध्यम से राजनीति के दावपेंच एवं जुलूस में विस्थापन तथा विभाजन की पीड़ा और त्रासदी की समस्या का उद्घाटन इस पत्र के अध्ययन द्वारा सम्भव होगा।

**सहायक पुस्तकें :**


1. गबन, प्रेमचंद, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. त्यागपत्र, जैनेंद्र, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
3. दिव्या, यशपाल. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. महाभोज, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
5. जुलूस,फणीश्वर नाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. प्रेमचंद और उनका युग, डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
7. उपन्यास स्वरूप और संवेदना, राजेंद्र यादव, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
8. जैनेंद्र के उपन्यास, परमानंद श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. उपन्यास की संरचना, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
10. हिंदी उपन्यासः नया पाठ, हेमंत कुकरेती, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
11. प्रेमचंद और भारतीय समाज, सं. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
12. उपन्यास की रचना प्रक्रिया, परमानंद श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
13. हिंदी उपन्यास का विकास, मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
14. जैनेंद्र कुमार : चिंतन और सृजन, मधुरिमा कोहली, पराग प्रकाशन, दिल्ली
15. प्रेमचंद : एक साहित्यिक विवेचन, नंददुलारे वाजपेयी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
16. अनासक्त आस्तिक : जैनेन्द्र की जीवनी : ज्योतिष जोशी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
17. हिन्दी उपन्यास का इतिहास : गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली


21-09-2023

21-09-2023

21/09/23

21.9.23

21.9.23

21.9.23



~~SEMESTER – VI~~

## MJC 10 : हिंदी कहानी

**Course Objective –**

इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिन्दी कहानी की विकास–यात्रा को समझ सकेंगे। इसके माध्यम से कहानी–साहित्य के स्वरूप को समझा जा सकता है। कहानियों के सम्वाद और कथा चरित्रों को जानने के साथ कहानीकारों से परिचय प्राप्त कर सकेंगे। कहानियों की पाठ–आधारित व्याख्या कर पाने में सक्षम होंगे।

| MJC 10 : हिंदी कहानी<br>(Theory: 06 Credits) | | | |
|---|---|---|---|
| Unit | Topics to be covered | No. of Lectures | L.T.P |
| 1 | उसने कहा था : चंद्रधर शर्मा गुलेरी; पूस की रात : प्रेमचंद; आकाशदीप : जयशंकर प्रसाद | 14 | |
| 2 | पाजेब : जैनेन्द्र; शरणदाता : अज्ञेय | 08 | |
| 3 | मिस पाल : मोहन राकेश; सिक्का बदल गया : कृष्णा सोबती | 10 | |
| 4 | दोपहर का भोजन :अमरकांत; तीसरी कसम : फणीश्वर नाथ रेणु | 12 | |
| 5 | भेड़िये : भुवनेश्वर; चीफ की दावत : भीष्म साहनी | 08 | |
| 6 | कोसी का घटवार : शेखर जोशी; पिता : ज्ञानरंजन | 08 | |
| | **कुल** | **60** | L - 60 + T – 15 = **75** |

**Course Ooutcome –**

इस पत्र के अध्ययन से हिन्दी कहानी की विकास–यात्रा में विविध काल–खण्ड की कहानियों और कहानीकारों के संवेदानात्मक धरातल को विविध–दृष्टियों से समझने में समर्थ होंगे। गुलेरी से लेकर प्रेमचन्द, प्रसाद, जैनेन्द्र, अज्ञेय, मोहन राकेश, अमरकान्त, रेणु, शेखर जोशी, ज्ञान रंजन की कहानियों की संवेदना और शिल्प की समुचित जानकारी से समृद्ध होंगे।

**सहायक पुस्तकें :**


1. कहानी : नई कहानी, नामवर सिंह
2. प्रतिनिधि कहानियाँ : सं. डॉ. दिनेश प्रसाद सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, पटना
3. यू.जी.सी. नेट, जेआरएफ, हिंदी पाठ्यक्रम में शामिल संपूर्ण कहानियाँ : महेंद्र सिंह, जेएनयू दिल्ली
4. एक दुनिया समानान्तर : सम्पादक– राजेंद्र यादव
5. मानसरोवर भाग–1 : – प्रेमचंद
6. भुवनेश्वर समग्र, सम्पादक दूधनाथ सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
7. मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

## SEMESTER - VI

### MJC - 11: हिन्दी नाटक एवं रंगमंच

## COURSE OBJECTIVES

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य नाटक एवं रंगमंच के स्वरूप को समझाने उसके विभिन्न रूपों के साथ–साथ बिहार की विशेष नाट्य शैली से विद्यार्थियों का परिचय कराना है। साथ ही विभिन्न नाटककारों एवं नाटकों के विश्लेषण तथा आलोचना करने की क्षमता का विकास करना भी मुख्य ध्येय है।

| MJC - 11 : हिन्दी नाटक एवं रंगमंच (Theory: 05 Credits) | | | |
|---|---|---|---|
| **Unit** | **Topics to be covered** | **No. of Lectures** | **L-T-P 5-1-0 Per Week** |
| 1 | नाटक एवं रंगमंच : अंतर्संबंध और अंतर्द्वंद; हिंदी रंगमंच के विकास की रूपरेखा; हिंदी नाटक के विभिन्न रूपों का परिचय; बिहार की विशेष नाट्य–शैलियाँ और रंगमंच | 08 | |
| 2 | अंधेरी नगरी : भारतेंदु हरिश्चंद्र | 08 | |
| 3 | स्कंदगुप्त : जयशंकर प्रसाद | 08 | |
| 4 | आषाढ़ का एक दिन : मोहन राकेश | 10 | |
| 5 | कबीरा खड़ा बाजार में : भीष्म साहनी | 10 | |
| 6 | कोणार्क : जगदीश चंद्र माथुर | 06 | |
| | **Total** | 50 | 50 (L) + 10 (T) = 60 |

## Course outcomes

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी नाटक एवं रंगमंच के स्वरूप, प्रकार एवं बिहार के विशेष नाट्य शैलियों से परिचित होंगे। साथ ही नाटकों एवं नाटककारों को पढ़ते हुए अपनी विश्लेषण एवं आलोचनात्मक क्षमता को विकसित करेंगे।

**सहायक पुस्तकें –**

1. नाट्यशास्त्र की भारतीय परंपरा और दशरूपक, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
2. नाटक और नाट्य शैलियाँ, दुर्गा दीक्षित, साहित्य भवन, इलाहाबाद
3. रंगमंच कला और दृष्टि, डॉ. गोविंद चातक, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
4. आज के हिंदी नाटक परिवेश और कई दृश्य, जयदेव तनेजा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
5. हिंदी नाटक का आत्म संघर्ष, गिरीश रस्तोगी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
6. रंगदर्शन, नेमीचंद्र जैन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. हिंदी नाट्य परिदृश्य, सं. डॉ. धीरेंद्र शुक्ल, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली
8. भारतीय नाट्य सिद्धांत उद्भव और विकास, डॉ. रामजी पांडे, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
9. रंग वैचारिकी : नए सदंर्भों में, संपादक आशा, अनन्य प्रकाश, नई दिल्ली
10. अंधेर नगरी, संपादक परमानंद श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
11. अंधेर नगरी : संवेदना और शिल्प, सिद्धनाथ कुमार, अनुपम प्रकाशन
12. स्कंदगुप्त : संवेदना और शिल्प, सिद्धनाथ कुमार, अनुपम प्रकाशन
13. आषाढ़ का एक दिन : विश्लेषण–विवेचन, संपादक सिद्धनाथ कुमार, अनुपम प्रकाशन, पटना
14. धर्मवीर भारती और उनका अंधायुग, डॉ. लक्ष्मण दत्त गौतम, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली

21.09.2023 21.9.23 21/9/23 21/9/23 21.09.2023 21/09/23 21.9.23 21.9.23

15. प्रसाद के नाटकों का पुनर्मूल्यांकन (प्रसाद के नाटक), सिद्धनाथ कुमार, अनुपम प्रकाशन
16. आधुनिक हिंदी नाटक का अग्रदूत मोहन राकेश, डॉ. गोविंद चातक, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

## SEMESTER - VI

## MJC-12 : हिंदी निबंध एवं अन्य गद्य विधाएँ

### Course Objectives

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी निबंध के विभिन्न रूपों, वैशिष्ट्य, प्रमुख निबंध एवं निबंधकारों के व्यक्ति एवं कृतित्व से परिचय कराना है। साथ ही निबंध के पाठ्यगत विश्लेषण के माध्यम से विद्यार्थियों की आलोचना क्षमता को विकसित करना भी मुख्य ध्येय है।

| MJC - 12 : हिंदी निबंध एवं अन्य गद्य विधाएँ (Theory: 05 Credits) | | | |
|---|---|---|---|
| **Unit** | **Topics to be covered** | **No. of Lectures** | **L-T-P 5-1-0 Per Week** |
| 1 | कछुआ–धर्म – चंद्रधर शर्मा गुलेरी<br>उत्साह – रामचंद्र शुक्ल | **08** | |
| 2 | देवदारू – हजारी प्रसाद द्विवेदी<br>महाकवि जयशंकर प्रसाद– शिवपूजन सहाय | **10** | |
| 3 | रजिया, रामवृक्ष बेनीपुरी<br>हिंदी कविता और छंद – रामधारी सिंह दिनकर | **12** | |
| 4 | ‘रामा’ (अतीत के चलचित्र से) – महादेवी वर्मा<br>किन्नर देश पर एक ऐतिहासिक दृष्टि (‘किन्नर देश में से) – राहुल सांकृत्यायन | **10** | |
| 5 | मेरी माँ ने मुझे प्रेमचंद का भक्त बनाया – मुक्तिबोध<br>‘बक़लम ख़ुद’ का ‘गप–शप़’ पाठ – डॉ. नामवर सिंह | **10** | |
| | **Total** | **50** | 50 (L) + 10(T) = 60 |

### Course outcomes

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् विद्यार्थी हिंदी निबंध के विभिन्न रूपों एवं वैशिष्ट्य से अवगत होंगे। साथ ही, हिंदी निबंधकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होते हुए अपनी आलोचनात्मक क्षमता को विकसित कर सकेंगे।

**सहायक पुस्तकें :**


1. हिंदी गद्य : विन्यास और विकास, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
2. छायावादोत्तर हिंदी गद्य साहित्य, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
3. हिंदी का गद्य साहित्य, रामचंद्र तिवारी
4. आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य, हरदयाल
5. महादेवी का गद्य साहित्य,माखनलाल शर्मा
6. आधुनिक हिंदी–साहित्य,लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
7. हिंदी गद्य का उद्भव और विकास, विजयेंद्र स्नातक
8. चंद्रधर शर्मा गुलेरीः व्यक्तित्व और कृतित्व, पीयूष गुलेरी
9. प्रारंभिक रचनाएँ : नामवर सिंह (सं. भारत यायावर), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

## SEMESTER – VII

### MJC-13 : हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता

### Course Objectives

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य पत्रकारिता के विकास में हिन्दी के प्रमुख साहित्यकारों के योगदान तथा हिंदी पत्रकारिता का हिंदी साहित्य के विकास में योगदान से विद्यार्थियों को परिचित कराना है। साथ ही विभिन्न कालों में हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता के विकास एवं स्वरूप से परिचय कराते हुए कुछ महत्वपूर्ण पत्र–पत्रिकाओं से अवगत कराना भी मुख्य ध्येय है।

| MJC - 13 : हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता (Theory: 05 Credits) | | | |
|---|---|---|---|
| **Unit** | **Topics to be covered** | **No. of Lectures** | **L-T-P 5-1-0 Per Week** |
| 1 | साहित्यिक पत्रकारिता : अर्थ, अवधारणा, और महत्त्व.<br>साहित्यिक पत्रकारिता का वैशिष्ट्य. | 08 | |
| 2 | भारतेंदु युगीन साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय और प्रवृतियाँ<br>द्विवेदी युगीन साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय और प्रवृतियाँ | 08 | |
| 3 | प्रेमचंद युगीन साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय और प्रवृतियाँ<br>स्वातंत्र्योत्तर साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय और प्रवृतियाँ | 08 | |
| 4 | समकालीन साहित्य पत्रकारिता : परिचय और प्रवृत्तियाँ<br>साहित्यिक पत्रकारिता में अनुवाद की भूमिका | 10 | |
| 5 | हिंदी की महत्वपूर्ण पत्र पत्रिकाएँ : (क) कवि वचन सुधा, हिंदी प्रदीप, सरस्वती, प्रताप, कर्मवीर, मतवाला | 10 | |
| 6. | हिंदी की महत्वपूर्ण पत्र पत्रिकाएँ : (ख) विशाल भारत, कल्पना, हंस, पहल, आलोचना। | 06 | |
| | **Total** | **50** | 50 (L) + 10 (T) = 60 |

## Course Outcomes

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् विद्यार्थी हिंदी पत्रकारिता के विकास में हिंदी साहित्यकारों के योगदान तथा हिंदी पत्रकारिता का हिंदी साहित्य के विकास में योगदान से अवगत होंगे। साथ ही विभिन्न युगों में हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता के विकास के स्वरूप से परिचित होते हुए कुछ मुख्य पत्र–पत्रिकाओं के संबंध में जानकारी हासिल करेंगे।

**सहायक पुस्तकें :**


1. साहित्यिक पत्रकारिता : ज्योतिष जोशी, वाणी प्रकाशन
2. साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य : सं. अरुण तिवारी
3. पत्रकारिता के उत्तर, आधुनिक चरण : कृपाशंकर चौबे
4. बिहार की हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता : कल्याण कुमार झा, साहित्य कला संगम, बेतिया
5. हिंदी पत्रकारिता : जातीय चेतना और खड़ी बोली साहित्य की निर्माण भूमि : डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
6. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और साहित्यिक पत्रकारिता : इंद्रसेन सिंह
7. भारतेन्दु और हिन्दी नवजागरण : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. हिन्दी के प्रमुख साहित्यकारों की पत्रकारिता – डॉ. अशोक कुमार सिन्हा अभिधा प्रकाशन, नई दिल्ली

## SEMESTER – VII

### MJC-15 : प्रयोजनमूलक हिंदी

## COURSE OBJECTIVES

वर्त्तमान समय में प्रयोजनमूलक हिंदी का अध्ययन हिंदी के विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण हो गया है। प्रयोजनमूलक हिंदी के विभिन्न प्रकारों की जानकारी एवं उसके स्वरूप से अवगत होना आज की मांग है। सरकारी कार्यालयों तथा व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में हिंदी के प्रयोग को सीखना विद्यार्थियों के लिए आवश्यक हो गया है। इस पाठ्य का मुख्य उद्देश्य प्रयोजनमूलक हिंदी के विभिन्न आयामों से विद्यार्थी को परिचित कराना है।

| MJC - 15 : प्रयोजनमूलक हिंदी (Theory: 06 Credits) | | | |
|---|---|---|---|
| **Unit** | **Topics to be covered** | **No. of Lectures** | **L-T-P 6-1-0 Per Week** |
| 1 | **प्रयोजनमूलक हिंदी** : स्वरूप, व्यवहार क्षेत्र, शैक्षिक संदर्भ : उद्देश्य और सीमा; मातृभाषा एवं अन्य भाषा के रूप में हिंदी, बोलचाल की सामान्य हिंदी, मानक हिंदी और साहित्यिक हिंदी, संविधान में हिंदी | 12 | |
| 2 | **हिंदी की शैलियाँ** : हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी; हिंदी का मानकीकरण | 06 | |
| 3 | **प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रमुख प्रकार** : कार्यालयी हिंदी और उसके प्रमुख लक्षण, वैज्ञानिक हिंदी और उसके प्रमुख लक्षण; व्यावसायिक हिंदी और उसके प्रमुख लक्षण; व्यावहारिक हिंदी और उसके प्रमुख लक्षण; संचार माध्यम (आकाशवाणी, दूरदर्शन,चलचित्र) की हिंदी और उसके प्रमुख लक्षण | 12 | |
| 4 | **हिंदी के प्रयोग क्षेत्र** : भाषा प्रयुक्ति की संकल्पना, वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी की प्रयुक्ति, अन्य प्रयुक्तियाँ–वाणिज्य, बैंकिंग, विधि एवं न्याय क्षेत्र की हिंदी | 12 | |

21.09.2023 21/09/23 21.9.23 21.9.23 21/9/23 21-09-2023 21.9.23

| | | | |
|---|---|---|---|
| 5 | **भाषा व्यवहारः** सरकारी पत्राचार, टिप्पणी लेखन, मसौदा लेखन, बैठकें और प्रतिवेदन प्रारूपण, सार–लेखन, विज्ञापन–लेखन, सरकारी और व्यावसायिक पत्र लेखन | **12** | |
| 6. | **हिंदी में पारिभाषिक शब्द निर्माण;** प्रक्रिया एवं प्रस्तुति | **06** | |
| | **Total** | **60** | 60 (L)+15 (T) = 75 |

## Course outcomes

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी प्रयोजनमूलक हिंदी के स्वरूप, व्यवहार एवं उनके प्रकारों से अवगत होंगे। साथ ही साथ सरकारी कार्यालयों एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में प्रयोग की जाने वाली हिंदी को सीख सकेंगे।

**सहायक पुस्तकेंः**

1. प्रयोजनमूलक हिंदी, माधव सोनटक्के, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. प्रयोजनमूलक हिंदी, रामकिशोर शर्मा, श्यामा प्रकाशन, इलाहाबाद
3. हिंदी भाषा का प्रयोजनमूलक स्वरूप, डॉ. चंद्र भाटिया, साहित्य भवन
4. प्रयोजनमूलक भाषा कार्यालयी हिंदी, कृष्ण कुमार गोस्वामी, कलिंगा प्रकाशन, दिल्ली
5. प्रयोजनमूलक कामकाजी हिंदी, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया. तक्षशिला प्रकाशन. नई दिल्ली
6. प्रयोजनमूलक हिंदी : संरचना और अनुप्रयोग, डॉ. रामप्रकाश, डॉ. दिनेश गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन
7. प्रयोजनी हिंदी, सूर्य प्रसाद दीक्षित, भारत बुक सेंटर, लखनऊ
8. प्रयोजनमूलक हिंदी का अध्ययन, संपादक सुशीला गुप्ता, जय भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. मीडिया की भाषा, वसुधा गाडगिल
10. प्रारूपण, शासकीय पत्राचार और टिप्पण–लेखन विधि, राजेंद्र प्रसाद श्रीवास्तव
11. आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना, डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद भारती भवन, पटना
12. हिन्दी व्याकरणः कामता प्रसाद गुरु, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली

21.09.2023 विपिन 21.9.23 मंगला रानी 21/09/23 21.9.23 21.9.23 21.09.2023 21/9/23 21/9/23

## SEMESTER – VIII

### MJC-16 : लोक साहित्य

## COURSE OBJECTIVES

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य भारतीय समाज में लोक के स्वरूप एवं महत्त्व तथा लोक की संस्कृति और उसके विभिन्न रूपों से विद्यार्थी को अवगत कराना है। साथ ही, लोक भाषा के महत्त्व एवं लोक और शिष्ट साहित्य के अन्तर एवं अंतर्संबंध को रेखांकित करना भी मुख्य ध्येय है।

| MJC - 16 : लोक साहित्य (Theory: 04 Credits) | | | |
|---|---|---|---|
| **Unit** | **Topics to be covered** | **No. of Lectures** | **L-T-P 4-1-0 Per Week** |
| 1 | लोक और लोकवार्ता, लोक संस्कृति की अवधारणा, लोकवार्ता और लोक संस्कृति, लोक संस्कृति और साहित्य, साहित्य और लोक का अंतर्संबंध, लोक साहित्य का अन्य सामाजिक विज्ञान से संबंध, लोक साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ | 10 | |
| 2 | भारत में लोक साहित्य के अध्ययन का इतिहास, लोक साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण। लोक गीत : संस्कारगीत, व्रतगीत, श्रमगीत, ऋतुगीत, जातिगीत | 06 | |
| 3 | लोकनाट्य : रामलीला, रासलीला, किर्तनियाँ, स्वांग, यक्षगान, विदेशिया, भांड, तमाशा, नौटंकी। हिंदी लोकनाट्य की परम्परा एवं प्रविधि। हिंदी नाटक एवं रंगमंच पर लोकनाट्यों का प्रभाव | 10 | |
| 4 | लोककथा : व्रतकथा, परिकथा, नाग–कथा, कथारूढियाँ और अन्धविश्वास | 05 | |
| 5 | लोकभाषा : लोक सुभाषित मुहावरे, कहावतें, लोकोक्तियाँ, पहेलियाँ | 05 | |
| 6. | लोकनृत्य एवं लोकसंगीत | 04 | |
| | **Total** | 40 | 40 (L) + 08 (T) = |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | 48 |

## Course outcomes

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी समाज में लोक के स्वरूप और उसके महत्त्व तथा लोक की संस्कृति और उसके विभिन्न रूपों से परिचित होंगे। साथ ही, लोक भाषा के महत्त्व, लोक साहित्य को समझ सकेंगे।

**सहायक पुस्तकें:**

1. लोक : पीयूष दइया (सं.)
2. लोक का आलोक : पीयूष दइया (सं.)
3. लोक साहित्य की भूमिका : धीरेन्द्र वर्मा
4. लोक साहित्य : सत्येन्द्र
5. भारतीय लोक साहित्य : श्याम परमार
6. पारंपरिक लोक–नाट्य : जगदीश चन्द्र माथुर
7. लोक साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा : मनोहर शर्मा
8. Tradition of Indian Folk Dance : Kapila Vatsyayan

MJC-14

To

The Principal Secretary to Governor

Rāj Bhavan, Patna

**Subject: Regarding submission of proposed syllabus of Research Methodology Social Sciences and Humanities undergraduate level.**

**Ref:BSU (UGC)-02/2023 -1473/GS(I), Dated 18.09.2023.**

Sir,

In compliance to your letter no. BSU (UGC)-02/2023 -1473/GS(I), Dated 18.09.2023., we are submitting thesyllabus of second semester MJC – 145 credit and 100 marks.

Yours faithfully

19.9.2023 — **Prof. Anil Kumar Ojha**, Head, Deptt. Of Political Science, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur

19/09/23 — **Prof. Arun Kumar Singh**,Department of Psychology, Patna University

19/09/2023 — **Prof. Ram Pravesh Yadav**, Deptt. Of Geography BRA Bihar University, Muzaffarpur

19.09.2023 — **Prof. Shefali Roy**, Director, Institute of Public Administration, Patna University, Patna

19/09/2023 — **Dr. Aditi Tyagi**, Asst. Professor of Political Science, Patna University, Patna

19.09.23 — **Prof. B. K. Lal**, Professor of Economics, Patna University, Patna

19/09/2023 — **Prof. Tarun Kumar**, Principal, Patna College, Patna

19/9/2023 — **Prof. Rashmi Akhouri**,Professor of Economics, PPU, Patna

19.09.2023 — **Prof. Dipak Kumar**, Professor of Sociology, Magadh University, Bodh Gaya

19/09/2023 — **Prof. Jayadeva Mishra**, Former HOD, A.I.H. and Archaeology, Patna University

**Enclosed as above.**

## Semester VII

## MJC 14- Research Methodology (Social Sciences& Humanities)

**Course credit- 05,** Full marks- 100

**Course Objectives:**

CO1: The course intends to familiarize the students of the fundamentals and process of research.

CO2: to acquaint the students with research aptitude in knowledge seeking.

CO3: to enable students to scientifically assess the reliability and validity of facts.

CO4: To empower students to conduct a factual estimate of socially relevant issues in a scientific manner.

**Course Outcomes**

On completion of the Course, the students can undertake independent research with following Outcomes:

LOC 1: Students will gain skills of scientific analysis.

LOC 2: Students will gain contemporary and interdisciplinary knowledge.

LOC 3: Students will have global understanding of nuances of Research.

19.9.2023 19/09/2023 19.09.2023 19.09.23 19.09.2023

19/09/2023 19/09/2023 19/09/2023

19.09.23

19/9/2023

| Unit | Topics to be covered | No. of lectures |
|---|---|---|
| I | Research- Meaning, Purpose, Significance, Types, Stages of Research, Review of Literature, Ethical issues in Research, Plagiarism. | 08 |
| II | Research Design- Meaning and types, Identification of Research Problems and Types of variables.<br>Hypothesis- Nature, Types, Sources, Importance, Characteristics of a good hypothesis. | 10 |
| III | Method and Tools of Data Collection<br>Sources of Data- Primary and Secondary, Comparative method, Observation, Interview, Questionnaire, and Schedule<br>Sampling Method- Concept, Types, Purpose, and Rationale | 12 |
| IV | Analysis and Processing of Data, Classification, and Tabulation of Data<br>Measures of Central Tendency and Variability, Graphic representation<br>Use of Internet and Computer technologies in Research- MS Word, MS Excel, Power point Presentation, SPSS | 10 |
| V | Report Writing and Thesis writing- Objective, Content, Layout, Research proposal/ Synopsis.<br>Referencing- Endnote, Footnote, In-text citation, Index, Diacritical work, Bibliography (MLA and APA formats), Webliography | 10 |
| | **Tutorial** | 10 |
| | **Total** | 60 |

**Suggested readings**


1. Ackoff, R.L., (1953)," Design of social research" The University of Chicago Press, Chicago.
2. Goode, W. and Hatt, P.K., (1952), "Methods in Social Research" MC Gracw-Hill.
3. Sharma, V.P. (2013), " Research Methodology" PanchsheelPrakashan, Jaipur.
4. Singh, A.K., "Test Measurements and Research Methods in Behavioural Sciences" Bharti Bhavan Publication.
5. मिश्रा , जयदेव : ऐतिहासिक अनुसन्धान, काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान , पटना।
6. आहूजा, राम: सामाजिक अनुसन्धान, रावत प्रकाशन, जयपुर।
7. राणा सुनील कुमार सिंह - सामाजिक शोध की पद्धति।
8. सावित्री सिन्हा: अनुसन्धान का स्वरुप, नेशनल पब्लिशिंग हाउस , दिल्ली।
9. विनय मोहन शर्मा: शोध प्रविधि , नेशनल पब्लिशिंग हाउस , दिल्ली।
10. सावित्री सिन्हा: अनुसन्धान की प्रक्रिया , विजयेंद्र स्नातक, हिंदी अनुवाद परिषद्।

# MIC-3: आधुनिक हिंदी कविता : छायावाद तक

## Course Objectives

इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी 1850 ई० से 1936 ई० तक की परिचय प्राप्त करने के साथ–साथ उस कालखण्ड के महत्वपूर्ण कवियों के काव्यगत अवदानों से परिचित हो सकेंगे।

| | **MIC-3 : आधुनिक हिंदी कविता (छायावाद तक) (Theory: 03 Credits)** | | |
|---|---|---|---|
| **Unit** | **Topics to be covered** | **No. of Lectures** | **L.T.P** 3-1-0 |
| 1 | • भारतेन्दु – भारत दुर्दशा निज भाषा उन्नति अहै : प्रारंभिक दस दोहे | 06 | |
| 2 | • मैथिलीशरण गुप्त – संतान, सखि वे मुझसे कहकर जाते (यशोधरा) | 04 | |
| 3 | • जय शंकर प्रसाद – आँसू– प्रारंभिक आठ छंद | 04 | |
| 4 | • सूर्यकांत त्रिपाठी निराला – भिक्षुक, विधवा | 04 | |
| 5 | • सुमित्रानंदन पंत – प्रथम रश्मि, मौन निमंत्रण | 04 | |
| 6 | • महादेवी वर्मा – जो तुम आ जाते एक बार, मधुर–मधुर मेरे दीपक जल | 04 | |
| 7 | • सुभद्रा कुमारी चौहान–झाँसी की रानी, वीरों का कैसा हो बसंत | 04 | |
| | **Total** | **30** | **L-(30)+T(10)=40** |

## Course Outcomes

कविता के पाठगत विश्लेषण के द्वारा विद्यार्थी अपनी विश्लेषणात्मक चेतना विकसित कर सकेंगे। साथ ही भारतीय नवजागरण एवं राष्ट्रीय आंदोलन को समझने की एक नयी दृष्टि का भी विकास संभव हो सकेगा। प्रतियोगिता परीक्षा की दृष्टि से भी यह उनके लिए सकारात्मक सिद्ध होगा।

**सहायक पुस्तकें :–**


1. आधुनिक हिंदी कविता का इतिहास : डॉ. नंद किशोर नवल, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली,
2. मैथिलीशरण : डॉ. नंद किशोर नवल, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
3. छायावाद : डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4. निराला कृति से साक्षात्कार : नन्द किशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. आधुनिक हिंदी कविता : डॉ. विश्वनाथ तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

6. महादेवी : इन्द्रनाथ मदान, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
7. जय शंकर प्रसाद : रमेश चन्द्र शाह, साहित्य अकादेमी, दिल्ली

## SEMESTER - IV

### MIC - 4: आधुनिक हिन्दी कविता : छायावाद के बाद

### COURSE OBJECTIVES

छायावाद के बाद हिन्दी कविता के विकास को समझने के लिए उस दौर के महत्त्वपूर्ण कवियों के व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व से अवगत होना जरूरी है। इस काल की कविता की प्रवृत्तियों एवं काव्यगत वैशिष्ट्य को समझने के पश्चात ही विद्यार्थियों की आलोचनात्मक क्षमता का विकास संभव होगा। कविता में हो रहे बदलाव को आत्मसात करने एवं तत्कालीन सामाजिक परिदृश्य से अवगत होने के लिए इस पाठ की आवश्यकता होगी।

| MIC - 4: आधुनिक हिन्दी कविता : छायावाद के बाद (Theory: 03 Credits) | | | |
|---|---|---|---|
| **Unit** | **Topics to be covered** | **No. of Lectures** | **L-T-P 3-1-0 Per Week** |
| 1 | **केदारनाथ अग्रवाल** – माँझी ! न बजाओ वंशी, वह जन मारे नहीं मरेगा<br>**नागार्जुन** – बादल को घिरते देखा है; शासन की बंदूक; अकाल और उसके बाद | 10 | |
| 2 | **रामधारी सिंह 'दिनकर'** – रश्मि रथी (तृतीय सर्ग)<br>**माखनलाल चतुर्वेदी** – झरना; कैदी और कोकिला, नाश का त्यौहार (हिमकिरीटिनी) | 10 | |
| 3 | **भवानीप्रसाद मिश्र** – सतपुड़ा के जंगल; गीत–फरोश (दूसरा सप्तक)<br>**रघुवीर सहाय** – पढ़िए गीता; रामदास; हँसो हँसो जल्दी हँसो, नेता क्षमा करें | 10 | |
| | **Total** | **30** | **30 (L) + 10 (T) = 40** |

## Course outcomes

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी छायावाद के बाद हिन्दी कविता में हो रहे बदलावों से अवगत होंगे। छायावादोत्तर हिन्दी कविता की प्रवृत्तियों एवं काव्यगत वैशिष्ट्य को समझ सकेंगे। उनकी कविता की समझ एवं आलोचनात्मक क्षमता में वृद्धि होगी। इस दौरान वे इस कालखण्ड के कवियों के व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व से भी परिचित होंगे।

**सहायक पुस्तकें –**


1. प्रतिनिधि कविताएँ : केदारनाथ अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. प्रतिनिधि कविताएँ : नागार्जुन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. कुरुक्षेत्र : रामधारी सिंह दिनकर, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली
4. काव्य–कुसुम : सं. गणेशानंद झा, गायत्री देवी, मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन, पटना
5. सन्नाटे का छंद : सं. अशोक वाजपेयी, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर
6. मन एक मैली कमीज है : सं. नंदकिशोर आचार्य, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर
7. प्रतिनिधि कविताएँ : रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8. चाँद का मुँह टेढ़ा है : ग. मा. मुक्तिबोध, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
9. आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहास : नंद किशोर नवल, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
10. कवि अज्ञेयः नंद किशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
11. कविता के नये प्रतिमान : नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
12. नयी कविता और अस्तित्ववाद : रामविलाश शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
13. तार सप्तक : सं. अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
14. दूसरा सप्तक : सं. अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
15. तीसरा सप्तक : सं. अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली

16. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ : नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
17. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
18. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास : लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
19. हिन्दी काव्य समीक्षा के प्रतिमान : महेश तिवारी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

## SEMESTER - V

### MIC - 5 : भारतीय काव्यशास्त्र

### COURSE OBJECTIVES

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय काव्यशास्त्र से परिचित कराना है। साथ ही, वे काव्य के विभिन्न उपकरणों अलंकार एवं छंद का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

| MIC - 5 : भारतीय काव्यशास्त्र (Theory: 03 Credits) | | | |
|---|---|---|---|
| **Unit** | **Topics to be covered** | **No. of Lectures** | **L-T-P 3-1-0 Per Week** |
| 1 | भारतीय काव्यशास्त्र का सामान्य परिचय, काव्य-लक्षण, काव्य-प्रयोजन | 10 | |
| 2 | प्रमुख अलंकारों के लक्षण उदाहरण– श्लेष, यमक, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति | 10 | |
| 3 | प्रमुख छंदों के लक्षण–उदाहरण – दोहा, चौपाई, रोला, सोरठा, कवित्त, सवैया, छप्पय | 10 | |
| | **Total** | 30 | **30 (L) + 10 (T) = 40** |

### Course outcomes

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी काव्यशास्त्र की मौलिक अवधारणाओं से परिचित होंगे। रस, अलंकार के विभिन्न भेदों एवं उनके उपयोग से भली भांति अवगत हो सकेंगे।

**सहायक पुस्तकें –**


1. काव्य के तत्व : आचार्य देवेंन्द्रनाथ शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. भारतीय साहित्यशास्त्र कोश : डॉ. राजवंश सहाय 'हीरा', बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना
3. भारतीय आलोचना – शास्त्र : डॉ. राजवंश सहाय 'हीरा', बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना

4. पाश्चात्य साहित्यशास्त्र कोश : डॉ. राजवंश सहाय 'हीरा', बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना
5. साहित्यालोचन : डॉ. श्याम सुंदर दास, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. भारतीय काव्य चिंतन, डॉ. शोभा कांत मिश्र, अनुपम प्रकाशन, पटना
7. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : डॉ. तारकनाथ बाली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8. भारतीय काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्य साहित्य : चिंतन, डॉ. सभापति मिश्र, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. पाश्चात्य साहित्य चिंतन : निर्मला जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
10. अरस्तु का काव्यशास्त्र : अनुवादक : डॉ. नगेंद्र एवं महेंद्र चतुर्वेदी, हिंदी अनुसंधान परिषद्, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
11. साहित्यालोचन : सिद्धांत और अध्ययन, डॉ. सीताराम दीन, भारती भवन, पटना
12. पाश्चात्य काव्य चिंतन – डॉ. शोभाकांत मिश्र, अनुपम प्रकाशन, पटना

## <u>SEMESTER - V</u>

## MIC - 6: हिंदी की साहित्यिक विधाएँ : उद्‌भव और विकास

## <u>COURSE OBJECTIVES</u>

हिंदी की साहित्यिक विधाओं के स्वरूप, उद्‌भव एवं विकास की अवधारणा को संपूर्णता में समझाना समझना इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है। इस पाठ के माध्यम से विभिन्न साहित्यिक विधाओं की विशिष्टता एवं महत्त्व से विद्यार्थियों को परिचित कराना तथा विभिन्न विधाओं के बीच के अंतर को स्पष्ट करना आवश्यक है ताकि विद्यार्थी विधाओं के विकास एवं आधुनिकता के संबंध को समझ सकें।

| MIC - 6 : हिंदी की साहित्यिक विधाएँ : उद्‌भव और विकास (Theory: 03 Credits) | | | |
|---|---|---|---|
| **Unit** | **Topics to be covered** | **No. of Lectures** | **L-T-P 3-1-0 Per Week** |
| 1 | साहित्य का स्वरूप : संक्षिप्त परिचय (भेद लक्षण एवं तत्त्व : भारतीय एवं पाश्चात्य मत)<br>हिंदी की साहित्यिक विधाएँ : सामान्य परिचय एवं उद्‌भव और विकास<br>पद्य : महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तककाव्य, चम्पूकाव्य, स्फुटकाव्य | 10 | |
| 2 | गीति काव्य, प्रगीत, नयी कविता, नवगीत गद्यः उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, निबंध, आलोचना, यात्रा–वृत्तांत | 10 | |

21.09.23

21/09/23

21-09-2023

| | | | |
|---|---|---|---|
| 3 | पत्र–साहित्य, डायरी, रिपोर्ताज, रेखाचित्र/शब्दचित्र, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा<br>साहित्यिक विधाओं में अंतर<br>• महाकाव्य और खण्डकाव्य<br>• प्रबंध काव्य और मुक्तककाव्य<br>• उपन्यास और कहानी<br>• नाटक और एकांकी<br>• संरमरण और यात्रा–वृत्तांत<br>• जीवनी और आत्मकथा<br>• रेखाचित्र और संस्मरण | 10 | |
| | **Total** | 30 | 30 (L) + 10 (T) = 40 |

## Course outcomes

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी साहित्यिक विधाओं के स्वरूप एवं इतिहास के साथ–साथ उनके उद्‌भव एवं विकास की अवधारणा को समझ पायेंगे। वे विभिन्न साहित्यिक विधाओं की विशिष्टता एवं महत्त्व के साथ ही विभिन्न विधाओं के मध्य मौलिक अंतर से अवगत होंगे।

**सहायक पुस्तकें –**


1. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिंदी साहित्य का इतिहास : संपादक डॉ. नगेंद्र, पेपरबैक
3. साहित्यालोचन : डॉ. श्यामसुंदर दास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. कविता क्या है : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
5. साहित्य विधाओं की अंत : प्रकृति : डॉ. हरिमोहन
6. हिंदी का गद्य साहित्य : रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, नयी दिल्ली
7. कविता के नये प्रतिमान : नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली


21.09.2023

21.9.23

21-09-2023

21.9.23

21/09/23

8. हिंदी गद्यः विन्यास और विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत : गणपति चंद्र गुप्त, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10. हिंदी उपन्यास का विकास : मधुरेश, लोकभारती, प्रकाशन, इलाहाबाद
11. हिंदी कहानी का विकासः मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
12. हिंदी आलोचना का विकासः मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
13. नयी कविताः नंददुलारे वाजपेयी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
14. हिंदी साहित्य : उद्भव और विकासः हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
15. हिंदी काव्य का इतिहास : रामस्वरूप चतुर्वेदी, राज कमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
16. हिंदी नाटक : बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
17. हिंदी साहित्य कोश : सं. डॉ. धीरेंद्र वर्मा (प्रधान), ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी
18. हिंदी आलोचना की पारिभाषित शब्दावली : डॉ. अमरनाथ, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
19. हिंदी कहानी का विकास : डॉ. गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
20. साहित्यालोचनः सिद्धांत और अध्ययन – डॉ. सीताराम दीन – भारती भवन, पटना
21. भारतीय काव्य चिंतन, डॉ. शोभाकान्त मिश्र, अनुपम प्रकाशन, पटना
22. पाश्चात्य काव्य चिंतन, डॉ. शोभाकान्त मिश्र, अनुपम प्रकाशन, पटना
23. बोलती रेखाएँ – डॉ. उषारानी सिंह – मांगलिका प्रकाशन, पटना
24. कुरान शरीफ और तुलसीचौरा (रेखाचित्र)– डॉ. उषा रानी सिंह

# SEMESTER - VI

## MIC - 7: प्रयोजनमूलक हिंदी

## COURSE OBJECTIVES

वर्त्तमान समय में प्रयोजनमूलक हिंदी का अध्ययन हिंदी के विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण हो गया है। प्रयोजनमूलक हिंदी के विभिन्न प्रकारों की जानकारी एवं उसके स्वरूप से परिचित होना आज की मांग है। सरकारी कार्यालयों तथा व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में हिंदी का प्रयोग करने की विधि को सीखना विद्यार्थियों के लिए आवश्यक हो गया है। इस पाठ्य का मुख्य उद्देश्य प्रयोजनमूलक हिंदी के विभिन्न आयामों से विद्यार्थी को परिचित कराना है।

| MIC - 7: प्रयोजनमूलक हिंदी (Theory: 03 Credits) | | | |
|---|---|---|---|
| **Unit** | **Topics to be covered** | **No. of Lectures** | **L-T-P 3-1-0 Per Week** |
| 1 | प्रयोजनमूलक हिंदी : स्वरूप, व्यवहार क्षेत्र, शैक्षिक संदर्भ : उद्देश्य और सीमा<br>बोलचाल की हिंदी, मानक हिंदी और साहित्यिक हिंदी | 12 | |
| 2 | प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रमुख प्रकारः न्यायालय में हिंदी, बैंक में हिन्दी रेलवे में हिंदी, विविध सरकारी कार्यालयों एवं संस्थाओं में हिंदी | 06 | |
| 3 | भाषा व्यवहार : सरकारी पत्राचार, टिप्पण, प्रारूपण, सार–लेखन, विज्ञापन–लेखन | 12 | |
| | **Total** | 30 | 30 (L) + 10 (T) = 40 |

## Course outcomes

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी प्रयोजनमूलक हिंदी के स्वरूप, व्यवहार एवं उनके प्रकारों से अवगत होंगे। साथ ही साथ सरकारी कार्यालयों एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में प्रयोग की जाने वाली हिंदी को सीख सकेंगे।

**सहायक पुस्तकें –**


1. प्रयोजमूलक हिंदी, माधव सोनटक्कें, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. प्रयोजनमूलक हिंदी, रामकिशोर शर्मा, श्यामा प्रकाश, इलाहाबाद
3. हिंदी भाषा का प्रयोजनमूलक स्वरूप, डॉ. चंद्र भाटिया, साहित्य भवन
4. प्रयोजनमूलक भाषा कार्यालयी हिंदी, कृष्ण कुमार गोस्वामी, कलिंगा प्रकाशन, दिल्ली
5. प्रयोजनमूलक कामकाजी हिंदी, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
6. प्रयोजनमूलक हिंदी : संरचना और अनुप्रयोग, डॉ. रामप्रकाश, डॉ. दिनेश गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन
7. प्रयोजनी हिंदी, सूर्य प्रसाद दीक्षित, भारत बुक सेंटर, लखनऊ
8. प्रयोजनमूलक हिंदी का अध्ययन, संपादक सुशील गुप्ता, जय भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. मीडिया की भाषा, वसुधा गाडगिल
10. प्रारूपण, शासकीय पत्राचार और टिप्पण– लेखन विधि, राजेंद्र प्रसाद श्रीवास्तव
11. आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना, डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद भारती भवन, पटना


21.09.2023 21-09-2023 21/09/23 21.9.23 21.9.23

## SEMESTER – VI

**MIC – 8** **हिन्दी कहानियाँ : पाठ**

**Course Objective –**

कहानी हिन्दी साहित्य की सर्वाधिक नयी विधा है। इस पत्र के अध्ययन के द्वारा हिन्दी कहानी की विकास–प्रक्रिया को समझने में मदद मिलेगी। साथ ही 20वीं शताब्दी के अलग–अलग काल–खण्डों की कहानियों की संवेदना एवं शिल्प से परिचित हो सकेंगे।

**(Theory : 3 Credits)**

| Unit | Topic to be covered | No. of Lectures | L.T.P |
|---|---|---|---|
| 1 | i) कानों में कंगना : राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह<br>ii) नमक का दारोगा : प्रेमचन्द | 10 | |
| 2. | iii) कहानी का प्लॉट : आचार्य शिवपूजन सहाय<br>iv) कहीं धूप कहीं छाया : बेनीपुरी<br>v) विष के दाँत : आचार्य नलिन विलोचन शर्मा | 10 | |
| 3. | vi) पंचलाइट : रेणु<br>vii) वापसी : उषा प्रियवदा | 10 | |
| | **कुल** | **30** | L - 30 + T – 10 = **40** |

**Course Outcome –**

इस पत्र के अध्ययन से हिन्दी कहानी के विकास–क्रम के साथ–साथ विविध काल–खण्डों की कहानियों के संवेदनात्मक धरातल की परख की क्षमता विकसित होगी। कहानी निस्संदेह साहित्य की सर्वाधिक मार्मिक विधा है। ऐसी स्थिति में राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह से लेकर आचार्य नलिन विलोचन शर्मा, आचार्य शिवपूजन सहाय, प्रेमचंद, बेनीपुरी, जैनेन्द्र, रेणु और उषा प्रियंवदा जैसे उच्च–कोटि के कहानीकारों एवं उनकी कहानियों के विश्लेषण से समृद्ध ज्ञान–चेतना का विकास संभव हो सकेगा।

**सहायक पुस्तकें–**

1. कहानी : नयी कहानी– नामवर सिंह
2. हिन्दी कहानी का विकास – मधुरेश
3. नयी कहानी, नये सवाल – डॉ॰ सत्यकाम
4. नलिन विलोचन शर्मा, रचना संचयन, सम्पादक– गोपेश्वर सिंह
5. शिवपूजन सहाय रचनावली– बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
6. प्रतिनिधि कहानियाँ– सम्पादक दिनेश प्रसाद सिंह, मोतीलाल बनारसी दास, पटना
7. दस प्रतिनिधि कहानियाँ– उषा प्रियंवदा, किताब घर, नई दिल्ली

21/9/23 21.09.2023 45. 21.9.23 21-09-2023 21/09/23 21.9.23

# SEMESTER – VII

**MIC – 9** **हिन्दी उपन्यास : पाठ**

**Course Objective –**

उपन्यास का अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताओं से परिचित तथा उपन्यास के तत्वों से अवगत हो सकेंगे, इस पत्र के अध्ययन से हिन्दी उपन्यास के विकास–क्रम में प्रेमचन्द, रेणु और आचार्य शिवपूजन सहाय जैसे उपन्यासकारों के संवेदना और शिल्प की जानकारी प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

**(Theory : 3 Credits)**

| Unit | Topic to be covered | No. of Lectures | L.T.P |
|---|---|---|---|
| 1 | i) निर्मला – प्रेमचन्द | 10 | |
| 2. | ii) देहाती दुनिया : आचार्य शिवपूजन सहाय | 10 | |
| 3. | iii) कितने चौराहे – रेणु | 10 | |
| | **कुल** | **30** | L - 30 + T – 10 = **40** |

**Course Outcome –**

इस पत्र के अध्ययन से औपन्यासिक तत्वों के साथ–साथ हिन्दी उपन्यास के विकास–क्रम की जानकारी समृद्ध होगी। हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द स्थापित उपन्यासकार हैं। हिन्दी उपन्यास का वास्तविक आरंभ प्रेमचन्द से होता है। ऐसी स्थिति में प्रेमचन्द के साथ–साथ बाद के उपन्यासकारों यथा–रेणु, और आचार्य शिवपूजन सहाय की सृजन प्रक्रिया को समझने में समर्थ सिद्ध होंगे।

**सहायक ग्रन्थ–**


1. निर्मला, प्रेमचन्द, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2. कितने चौराहे, फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. देहाती दुनिया– आचार्य शिवपूजन सहाय
4. प्रेमचन्द और उनका युग, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. उपन्यास की संरचना, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. प्रेमचन्द और भारतीय समाज, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली




~~SEMESTER – VIII~~

**MIC- 10** हिन्दी गद्य (विविध विधाएं) : पाठ

**Cource objective :-**

हिन्दी गद्य की विविध विधाएँ साहित्य के विविध रंगों का पयार्य है। इस पत्र के अध्ययन से कथेतर गद्य की समझ विकसित होगीं निबन्ध, संस्मरण, आत्मकथा, डायरी और जीवनी– साहित्य के अनुशीलन से साहित्यिक समझ को परिपक्व करने में पूरी तरह सक्षम होंगे।

**(Theory : 3 Credits)**

| Unit | Topic to be covered | No. of Lectures | L.T.P |
|---|---|---|---|
| 1 | (i) मजदूरी और प्रेम : सरदार पूर्ण सिंह<br>(ii) उत्साह : रामचन्द्र शुक्ल | 10 | |
| 2. | (i) अशोक के फूल : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी<br>(ii) आँगन का पंछी : विद्यानिवास मिश्र | 10 | |
| 3. | (i) रामा : महादेवी वर्मा<br>(ii) किन्नर देश : एक ऐतिहासिक दृष्टि (किन्नर देश में से) :<br>राहुल सांकृत्यायन<br>(iii ) हिन्दी कविता और छन्द : रामधारी सिंह दिनकर | 10 | |
| | **कुल** | **30** | L - 30 + T – 10 = **40** |

**Course Outcome :-**

हिन्दी गद्य, साहित्य की नवीनतम विधा है। समकालीन परिप्रेक्ष्य में कथा– साहित्य को ही हिन्दी गद्य का पर्याय मान लिया गया है। लेकिन कथा–साहित्य से इतर भी गद्य की कई मर्मस्पर्शी विधाएँ जो संवेदना और शिल्प के स्तर पर जीवन को झंकृत करने में सक्षम है। प्रस्तुत पत्र के अध्ययन से निश्चय ही गद्य की अन्य विधाओं की मार्मिकता और हृदयस्पर्शिता के धरातल से परिचित होंगे और साहित्य– क्षितिज अत्यन्त समृद्ध होगा।

**सहायक ग्रंथ :–**

1. हिन्दी गद्य : विन्यास और विकास, – डॉ रामस्वरूप चतुर्वेदी
2. छायावादोत्तर हिन्दी गद्य साहित्य, – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
3. हिन्दी गद्य का विकास – रामचन्द्र तिवारी
4. हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास – विजयेन्द्र स्नातक
5. हिन्दी गद्य का विकास– डॉ॰ रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
6. अशोक के फूल– हजारी प्रसाद द्विवेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. आँगन का पंछी और बंजारा मन– डॉ॰ विद्यानिवास मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
8. अतीत के चलचित्र– महादेवी वर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. चिंतामणि भाग–1– रामचन्द्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10. किन्नर के देश में– राहुल संकृत्यान, किताब महल, दिल्ली
11. मिट्टी की ओर– रामधारी सिंह दिनकर, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली